एक अध्यापक का अपने छात्रों के नाम सन्देश

"शास्त्रों से, किताबों से, इंटरनेट से, अध्यापकों से, बुद्धिमान दार्शनिकों, ज्ञानी पाठकों से या और कंही से भी मिले ज्ञान में सर्वोपरि वो बात है जो किसी के दिल को छू जाये और जिससे किसी की जिंदगी बदल जाये"

प्रिय छात्रों, इस दुनिया को चलाने वाला वो परमपिता परमेश्वर, अल्लाह, वाहे गुरु, मसीहा या जो भी नाम उस परम सत्ता को इंगित करता हो, वो है, उसके पास सबको देने के लिए भरपूर भंडार है, किसी चीज की कमी नहीं है, फिर क्या हमको देने के लिए उसके पास कुछ कम पड़ जायेगा?, शायद हमारे में ही, ऐसी कुछ कमिया रह गयी हैं कि हमें उस कुल मालिक से कुछ प्राप्त करना ही नहीं आ रहा, बस जरुरत है तो हमें अपने आप को उन कमियों से मुक्त करने की। परमपिता ने हम आत्माओं को मनुष्य रूप में इस दुनिया में भेजा ताकि हम यंहा पर इंसान बनकर अपनी जिंदगी की पूर्णता प्राप्ति कर सकें लेकिन क्या हम आज तक इंसान बन पाये हैं, हमारा जिंदगी जीने का नजरिया कैसा है, हम किसी मानव रूप को कैसे तोलते है, क्या इस तरह कि वह पुरुष है या स्त्री, वह सुन्दर है या कुरूप, वह उच्च है या नीच, वह बड़ा है या छोटा, वह अच्छा है या बुरा, अगर ऐसे अनेक मापदंडो से हम किसी को परखते है तो शायद अभी तक हम इंसान की परिभाषा में खरे नहीं उतरे हैं, जिस दिन से किसी को देख कर यह ही लगता हो कि वह और कुछ नहीं, मानव रूप में एक आत्मा है, तो समझों खुशिया हमारे क़दमों में हैं। जिंदगी में सब चीजों से पहले एक उच्च नैतिक व्यवहार की सर्वोपरि आवश्यकता है, अपनी रहनी पवित्र हो, करनी ईमानदार हो, बोलचाल, पहनावा, उठक-बैठक में एक सुसभ्य व सुसंस्कृत आचरण झलकना चाहिए, क्या हम जिंदगी में कुछ प्राप्ति से पहले इन सब चीजों की तरफ ध्यान देते हैं अगर नहीं तो यह एक वैसा ही उदाहरण है जैसे किसी ने अपने जीवन को बचाने के लिए सर्वप्रथम भोजन, फिर पानी, फिर हवा और अंत में अपनी आत्मा पर ध्यान दिया, अगर इस क्रम को उल्ट देते तो जिंदगी कुछ और हो सकती थी।

उच्च आचरण के साथ-साथ, जिंदगी में कुछ पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, अक्सर हम किस्मत व मेहनत को लेकर उलझन में रहते हैं, किस्मत व मेहनत दोनों घड़ी के उन मिनट व सेकंड की धुरियों की तरह है जो आपस में जुड़ी रहती हैं और एक के घूमने पर दूसरी भी घूमती है, मिनट का एक कदम पाने के लिए सेकंड को ६० कदम पार करने पड़ते हैं, तो समझ लीजिये किस्मत का एक पल पाने के लिए मेहनत के कितने गुना ज्यादा पल गुजारने होंगे।

लक्ष्य प्राप्ति से जुडी एक और बात है, समय। क्या हर पल हम अपने लक्ष्य प्राप्ति की तरफ सजग हैं, आज हमारी दिनचर्या क्या है, क्या हम वो ही कर्म कर रहे हैं जो हमें अपने लक्ष्य् की ओर ले जायेंगे, शायद हमें अहसास रहता है या नहीं लेकिन सच्चाई यही है कि कल इसी वक्त की तुलना में आज इसी वक्त तक हमारी उम्र पूरी एक दिन कम है और आने वाले कल में इसी वक्त तक एक दिन और कम हो जाएगी, अगर समय की आज हम कद्र नहीं कर रहे हैं तो कल के समय में हमारी कोई कद्र नहीं होगी। इस विषय में सादा जीवन समय की बचत में बहुत सहायक है, साथ में पैसे की भी बचत करता है और अपने स्वभाव को भी नम्र बनाता है, तो क्यों न इन सब फायदों के लिए हम सादा जीवन अपनाएं।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि समय के साथ मेहनत, अपने आप के प्रति निष्ठावान व परमपिता परमेश्वर में पक्का विश्वास हो तो सफलता कंही दूर नहीं। सब चीजें तो मेहनत करने पर सहज ही प्राप्त हो जाएगी। परन्तु यह ज़िन्दगी क्षणभंगुर है पता नहीं कब इसका अंत हो जाये, अतः ज़िन्दगी में कुछ और बन सको या नहीं, एक सच्चा इंसान बनकर जरूर जीना, अपना व्यवहार हर किसी के दिल को छू जाने वाला होना चाहिए ताकि सबकी ख़ुशी में ही अपनी ख़ुशी पाकर, कुछ नहीं पाकर भी, सब कुछ पाने का सर्वोपरि अहसाह कमा कर अपने मनुष्य जीवन को धन्य कर सकें।

सादर धन्यवाद !

सबमें तुच्छ रूपः- मूला राम
सहायक आचार्य (शस्य विज्ञान)
कृषि अनुसंधान उप केंद्र, सुमेरपुर (पाली)
वेबसाइट: www.mragronomist.com